Get More Visit : http://hindicomics.blogspot.com

Diamond Comics Hindi----------A. H. W. ----------Paltu Series--------R.N.I. N0. 39423/81

डायमण्ड कॉमिक्स

लाए हैं

एक के बाद एक देशी एवं विदेशी कॉमिक्स के खजाने

सदस्यता हंगामा

तीनों पत्रिकाओं की सदस्यता लें हरेक के साथ ढेरों इनाम पाएं

प्रत्येक पत्रिका के लिए	आप देंगे सदस्यता शुल्क	हर माह पाएं पत्रिका मूल्य 30/-	आप पाएंगे		
			हर माह पाएं 15/- का उपहार मुफ्त	सदस्यता शुल्क देते समय पहले अंक के साथ पाएं उपहार	कुल
1 साल के लिए	Rs. 360/-	Rs. 360/-	+Rs. 180/-	+Rs. 75/-	=Rs. 615/-
2 साल के लिए	Rs. 720/-	Rs. 720/-	+ Rs. 360/-	+ Rs. 180/-	=Rs. 1260/-
3 साल के लिए	Rs. 1080/-	Rs. 1080/-	+ Rs. 540/-	+ Rs. 250/-	=Rs. 1870/-
5 साल के लिए	Rs. 1800/-	Rs. 1800/-	+ Rs. 900/-	+ Rs. 500/-	=Rs. 3200/-

अगर आप एक साथ तीनों पत्रिकाओं के सदस्य बनते हैं तो आप अतिरिक्त 15% लाभ उठायेंगे।

तीनों पत्रिकाओं के लिए पैकेज दर

1 साल के लिए	Rs. 918/-	Rs. 1080/-	+Rs. 540/-	+Rs. 225/-	=Rs. 1845/-
2 साल के लिए	Rs. 1836/-	Rs. 2160/-	+ Rs. 1080/-	+ Rs. 540/-	=Rs. 3780/-
3 साल के लिए	Rs. 2754/-	Rs. 3240/-	+ Rs. 1620/-	+ Rs. 750/-	=Rs. 5610/-
5 साल के लिए	Rs. 4590/-	Rs. 5400/-	+ Rs. 2700/-	+ Rs. 1500/-	=Rs. 9600/-

कॉमिक वर्ल्ड / कॉमिक पिटारा / कॉमिक डाईजेस्ट हंगामा योजना
257, दरीबा कलां, दिल्ली-110 006

मैं कॉमिक वर्ल्ड / कॉमिक पिटारा / कॉमिक डाईजेस्ट का (हिन्दी/अंग्रेजी/बंगला) का .....वर्ष के लिए गौरवशाली सदस्य बनना चाहता/चाहती हूं। साथ में मनी आर्डर/डी.डी.नं.....दिनांक.....भेज रहा/रही हूं। मुझे रु. ..... के डायमण्ड कॉमिक्स मुफ्त उपहार में भेजने की कृपा करें।

उम्र.....

नाम.....

पता.....

पिन कोड.....

डायमण्ड कॉमिक्स
D-52 Rs. 15.00

पा० चाचा चौधरी और कराटे सम्राट

कार्टूनिस्ट प्राण

यह कॉमिक कार्टूनिस्ट प्राण की विभिन्न रचनाओं में से एक है. प्राण का जन्म कसूर नामक छोटे से कसबे में हुआ था, जो अब पाकिस्तान में है. विभाजन के बाद उनका परिवार ग्वालियर आकर बस गया. एम.ए. (राजनीति) और बम्बई में फाइन आर्ट्स का अध्ययन करने के बाद उनका कार्टूनिंग कैरियर 1960 में दैनिक मिलाप, नई दिल्ली से शुरू हुआ.

उन दिनों विदेशी कॉमिक स्ट्रिप्स का पूरे भारत में एकाधिकार था. प्राण ने इस एकाधिपत्य को समाप्त करने के विचार से भारतीय पात्रों को लेकर स्थानीय विषयों और समस्याओं पर कॉमिक्स बनानी शुरू की. उन्होंने एक आम मध्यम वर्ग की भारतीय गृहिणी को लेकर 'श्रीमतीजी' कॉमिक्स बनाई, जो अब 'मनोरमा' (इलाहाबाद) में प्रकाशित हो रही है. उनके दूसरे चरित्र 'चाचा चौधरी', 'रमन', 'बिल्लू' और 'पिंकी' सारे भारत में लोकप्रिय हो चुके हैं.

भारत में सबसे ज्यादा कॉमिक्स बनाने के लिये उनका नाम लिम्का बुक आफ रिकार्ड्स में दर्ज है तथा उनकी चाचा चौधरी स्ट्रिप्स को अंतर्राष्ट्रीय म्युजियम आफ कार्टून आर्ट, अमरीका में प्रदर्शित किया गया है.

डायमण्ड कॉमिक्स ने उनकी स्ट्रिप्स को पुस्तकबद्ध करके एक नया आयाम दिया.

1983 में स्वर्गीय प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने प्राण की राष्ट्रीय एकता पर बनाई गई कॉमिक्स 'रमन–हम एक हैं' का बिक्री के लिए विमोचन किया. 1982 वर्ष का ठिठोली पुरस्कार इनको देकर सम्मानित किया गया.

प्राण के चरित्रों की अत्यन्त लोकप्रियता का रहस्य है कि वे सीधे सरल हास्य द्वारा पाठकों को भीतर तक गुदगुदा देते हैं. उनके शब्दों में–"अगर मैं टैक्स और मंहगाई के बोझ से दबे भारतीयों को कुछ हंसा सकूं तो अपने मकसद को सफल समझूंगा".

– प्रकाशक

Printed and Published by Gulshan Rai on behalf of Diamond Comics, 257, Dariba Kalan, Delhi-6 & Printed at Jain Offset Printers, 2864, Chail Puri, Kinari Bazar, Delhi-110006
Editor : Gulshan Rai
RNI No. :39423/81

अरे बेवकूफ, बंदूक की गोलियां और बम उसका बाल बांका न कर सके, यह याकोहामा किस खेत की मूली है ?
सरदार, अभी आप ने कुछ देखा ही नहीं.
याकोहामा! कराटे का करिश्मा दिखाओ.
फटाक!
ताड़
देखा सरदार! तुम पास नहीं खड़े थे. नहीं तो तुम्हारी वही हालत होती जो पेड़ों की हुई है.
वाह! मान गया मैं कराटे की ताकत को.
वह चाचा चौधरी, मेरा दुश्मन नम्बर एक आ रहा है. उसे ठिकाने लगा दो.

बचो! आया मेरा वार!
हा-हा-! चौधरी अब तुम्हारी सारी अक्ल कहां भाग गई ?
चाचा चौधरी थोड़ी लाल मिर्च हाथ पर डालता है.
याकोहामा अपने अगले वार के लिये आगे बढ़ता है.
ओह!
फूंक!
ओह! मेरी आंखों में लाल मिर्च चली गई!... कुछ दिखाई नहीं देता.
तुम याकोहामा के कराटे देखो. मैं मटरपनीर खाने चला.
© PRAN'S FEATURES

चाचा चौधरी की कहानी

दादाजी, कोई कहानी सुनाओ.

आज मैं तुम को एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बताता हूं जिस की जिंदगी किसी कहानी से कम मनोरंजक नहीं..

.. वह और कोई नहीं चाचा चौधरी हैं. मैं ने उसे बचपन से देखा है. वह बचपन से ही दिलेर और दूरदर्शी था. उसके पिता राम् चौधरी थे और माता का नाम था दुलारी.

" वे एक कस्बे में रहते थे. उन के पास सब कुछ था, पर औलाद न थी.. "

".. फिर जब औलाद हुई तो दो जुड़वां बच्चे. एक का नाम धज्जू और दूसरे का छोटू रखा गया. "

" दोनों बच्चे इतने हमशक्ल थे कि उनको पहचानने में मां बाप भी धोखा खाजाते. "

छोटू, इधर आओ!

वह धज्जू है. छोटू यह रहा.

" पहचान के लिये दोनों बच्चों को अलग रंग के कपड़े पहनाने शुरू कर दिये. धज्जू को हरे और छोटू को लाल. "

रामू चौधरी, यह क्या कर रहे हो?

वे भारी बक्से छत पर पहुंचाने हैं.

इसलिये मैं ने यह तरकीब निकाली है.

रामू, तुम्हारे दोस्त ने बुलाया है. अभी.

बच्चों, मैंने रस्सी मशीन से बांध दी है. हम अभी आये.

कुछ देर बाद ही..
इस छोकरे को अगर उठा कर ले जाऊं तो फिरौती में काफी पैसा मिल जायेगा
भईया! मुझे बचाओ! बचाओ!
चुप! शोर किया तो-
खट!
धड़ाम
हाय! मर गया!
यही घोटू आगे चल कर चाचा चौधरी के नाम से मशहूर हुआ.
© PRAN'S FEATURES

दादाजी, फिर उस डाकू का क्या हुआ?
"पुलिस ने आ कर वह भारी बक्स हटाया और उसे गिरफ्तार किया."
शाबाश घोटू ..आज तुम्हारी सूझबूझ की वजह से तुम्हारे भाई की जान बच गई.
दादाजी, चाचा चौधरी अर्थात् बचपन का घोटू स्कूल जाता था?
जाता तो था परंतु उस ने किताबों की बजाये प्रकृति के सीधे अध्ययन को ज्यादा महत्व दिया. इस से उस का सामान्य ज्ञान बढ़ा.
C-315

"उस ने देखा कि लकड़ी की बड़ी नाव नदी में तैरती रहती है.."

"जबकि लोहे का छोटा गोला डूब जाता है. इसमें उसने यह निष्कर्ष निकाला कि पानी से हल्की चीज तैरती रहती है और भारी डूब जाती है."

"एक दिन जब वह घर लौट रहा था तो.."

वह छोटू अपने आप को बड़ा तीस मार खां समझता है.

अभी से छिकने लगाये देते हैं.

लेकिन जरा सम्भल कर. वह है बड़ा तेज.

अरे इस डंडे ने बड़ों बड़ों के होश ठिकाने लगा दिये हैं.

डंडा धुपा लेता हूं. उस के करीब आते ही वार करूंगा.

मारो !

ताड़ !

ओह ! तुम ने मेरी खोपड़ी तोड़ कर रख दी.

डंडे को मारो गोली ! इसे दोनों तरफ से टक्करें मार मार कर घायल कर दो.

टनन

ओह !

इस तरह हमारा चाचा चौधरी बचपन से ही खतरों से खेलता आया है.

©PRAN'S FEATURES

अच्छा बच्चो, अब मेरा आराम करने का समय हो गया है.

नहीं दादाजी, हमें चाचा चौधरी की एक और कहानी सुनाओ.

अच्छी बात है.

घोट अर्थात् चाचा चौधरी जब बड़ा हुआ तो उसे एक शौक बॉक्सिंग का भी था. उस का गुरु था वज्रपति. वज्रपति एक सौ पचास वर्ष का था.

एक सौ पचास?

"हां, वह बड़ा तजुर्बेकार आदमी था."

मुक्केबाजी में ताकत इतनी काम नहीं आती जितना कि चौकन्नापन और तेज रफ़्तार

"एक बार चाचा चौधरी का बॉक्सिंग का मुकाबला हुआ. एक के विरोध में चार."

शुरू!

ओह!

ओह!

बुतना तेज मुक्केबाज मैं ने पहले कभी नहीं देखा.

"एक बार चाचा चौधरी कहीं जा रहा था.."

"कि उस ने एक औरत के चीखने की आवाज सुनी..."

बचाओ!

बचाओ!

घबराओ नहीं,

क्यों न पतले में तुम्हारी खोपड़ी उड़ा दूं?

देखो, तुम्हारे पीछे कौन है?

यह बहुत पुरानी ट्रिक है लेकिन हमेशा काम आती है.

ओह!

उठो. और मेरे साथ पुलिस स्टेशन चलो.

उस के बाद चाचा चौधरी को उम्र कैद हो गई.

चाचा चौधरी को उम्र कैद? क्यों?

जुर्म तो उस डाकू ने किया था!

यह अन्याय है!

दिन!

घंटी बजी. देखो दरवाजे पर कौन है?

चाचा चौधरी?

हां, हम तुम्हारे दादाजी के दोस्त हैं

चाचाजी, जुर्म तो उस डाकू ने किया था, फिर उम्र कैद आप को क्यों हो गई?

हा-हा-!

उस घटना के बाद, फिल्मी हीरो-हीरोइन की तरह मेरा उस युवती के साथ विवाह हो गया. वह तुम्हारी यह चाची है. क्या यह उम्र कैद न हुई?

गुलामी खत्म

चाचाजी, आज सारी इमारतों पर तिरंगे क्यों लहरा रहे हैं?

आज पंद्रह अगस्त है. इस दिन हमें आजादी मिली थी

आजादी? यह किस चिड़िया का नाम है?

तुम ने गुलामी देखी नहीं ना, इसलिये आजादी का मतलब नहीं जानते. मिठाई का मजा लेने के लिये कड़वाहट का अनुभव होना जरूरी है.

थोड़ी दूर...

भागो! और तेज भागो!

रुको! सेठ हंटरदास! इसे क्यों दौड़ा रहे हो?
तड़ाक!
घोड़े की जगह तुम ने आदमी जोत रखा है? आखिर इतनी बेरहमी क्यों?
अपने बीमार बच्चे की दवाई लाने के लिये इस ने मुझ से दस रुपये उधार लिये थे. यह कर्ज चुका नहीं सकता, इसलिये उससे यह काम ले रहा हूं.
हंटरदास, अगर मैं तुम्हें इस मरियल आदमी के बदले यह हट्टा कट्टा साबू दे दूं तो कैसा रहेगा?
वाह! साबू तो और भी तेज दौड़ेगा.

उस आदमी की जगह साबू को जोत दिया जाता है.
फटाक!
दौड़ो! और तेज!
साबू को हंटर पड़ते ही वह हवा से बातें करने लगता है.
अरररर, रुको! मैं हवा में उड़ गया.
हंटरदास, और सैर करनी है?
नहीं, मुझे बचाओ!
© PRAN'S FEATURES

धड़ाम!
भड़ाम!
दीवाली वाले दिन..
पटाखे
अरे साबू, कहां से आ रहा है?
अपने को बाजारू चिटपिटियों में मजा नहीं आता. इसलिये पटाखों की फैक्ट्री से स्पेशल एटम बम बनवाया है.
पर अब समस्या यह है कि इसे चलाऊं कहां? अगर आबादी वाले इलाके में चलाता हूं तो इस के धमाके से आसपास के मकान ढेर हो जायेंगे.
यह खाली जगह ठीक है.
साबू, यह जगह मकान बनाने के लिये साफ करनी है. यह टीला हटाने में हमारी मदद करो.

ठहरो, पहले मुझे अपना बम जमा लेने दो.
कड़ड़ड़ड़
कहां है वह टीला?
हैं??? आंखों पर विश्वास नहीं होता.
यह लो टीला हटाने का मेहनताना, पांच सौ रुपये. जाकर मिठाई खाना.
उधर चाचा चौधरी अपने घर के बाहर...
यह पटाखा जरा ज्यादा जोरदार है.
इसलिये अपने कानों में उंगलियां दे लो.

तभी..
हैंड्ज़ अप!
चौधरी, स्मगलरों के गिरोह ने मुझे तुम्हारा सफाया करने के लिये एक लाख रुपया देना मंजूर किया है. इसलिये मरने के लिये तैयार हो जाओ!
मरने से पहले तुम्हारी कोई आखरी इच्छा हो तो बताओ?
कोई मुझे दीवाली मुबारक कह दो.
दीवाली मुबार..
भड़ाम!
बड़ा जेम्स बांड का कारतूस बना फिरता था.

साबू की शेव
नाई बेरमल को जाता देख डाकू गोबरसिंह ने रोक लिया.
कहो बेरमल, कहां जा रहे हो?
साबू ने शेव के लिये बुलाया है. एक शेव के पूरे पांच रुपये देगा.
यह लो, मैं दस रुपये देता हूं. शेव करते समय साबू का चेहरा इतना जख्मी कर दे कि महीना भर वह अस्पताल में मरहमपट्टी कराता रहे.
ठीक है.
चलो, मैं भी ज़रा तमाशा देखूं.
साबू आज मेरे नाक पर खुजली हो रही है। लगता है कोई मुसीबत आरही है।

चाचाजी, आप फिक्र न करो. सिर्फ बेरमल ने आना है. वह मच्छर मेरा क्या नुकसान करेगा?
ठीक. तो फिर मैं चला. मुझे खुफिया पुलिस के इन्स्पेक्टर ने परामर्श के लिये बुलवाया है.
अरे बेरमल! तू आ गया. चल, जल्दी से शेव बना.
अभी लो!
लो साबुन तो मला गया.
अब इसे रख कर दूसरा सामान लाऊँ.
लो, समझ गये न?

अरे! ये छैनी और हथौड़ा?
साधु! तुम्हारी दाढ़ी के बाल बहुत कड़े हैं; उस्तरे से नहीं कटेंगे.
बेरमल ने हथौड़ी का एक भरपूर हाथ छैनी पर मारा तो साधु चिल्ला उठा.
ओह!
टननन!
घप!
तुम ने इतने जोर की हथौड़ी क्यों मारी?
माफ कर दो! मुझे डाकू गोबरसिंह ने कहा था.
बाप रे, भागो!
©PRAN'S FEATURES

लिफ़्ट
चाचाजी, यह दुनियां आखिर है क्या ?
यह दुनियां एक गोरखधंधा है. इसमें जितना दिमाग खपाओगे, उतना ही उलझ जाओगे.
बड़े बड़े फिलास्फरों जैसे अरस्तू, सुकरात, चाणक्य और शेख सादी ने अपनी सारी उम्र गंवादी, उनके पल्ले कुछ न पड़ा. फिर हमारी समझ में यह दुनियां क्या आयेगी ?
हू--हू--हू!
क्यों भाई छटंकीदास! किसी की मौत हो गई है क्या ?
नहीं.

तो फिर रो क्यों रहे हो?
मैंने इस इमारत की छत पर पहुंचना है और लिफ्ट खराब है.
तो सीढ़ियों से चले जाओ!
मैं दिल का मरीज हूं. डाक्टर ने सीढ़ियां चढ़ने से मना किया है.
!
सोच में पड़ गये चाचाजी? हमने तो सुना था कि तुम्हारा दिमाग कम्प्यूटर से भी तेज चलता है. अब अक्ल कहां घास चरने चली गयी?
एक मिनट ठहरो.
तुम इस तख्ते के उस सिरे पर बैठ जाओ.
अरे मुझे ऊपर पहुंचना है, बच्चों का खेल नहीं खेलना.
तुम बैठो तो सही.

लो, बैठ गया.
साबू, ज़रा इस तरफ तख्ते पर एक पैर मार देना.
स्सर्र र र र र!!!
धन्यवाद!
© PRAN'S FEATURES

पागल सांड
अरे साबू, एकदम उठकर कहाँ चल दिये?
चाचाजी, बैठे-बैठे आलस आने लगा था, सोचा दस-पंद्रह मील की सैर कर आऊं.
जल्दी लौटकर आना. चाची तेरे लिये रबड़ी बना रही है.
बेफिक्र रहो चाचाजी. मिनटों में लौटता हूं.

थोड़ी दूर पर
अरे लल्लू! यह भैंसा क्यों बंद कर रखा है?
यह पागल भैंसा है. जब साबू इधर से निकलेगा, मैं इसे खोल दूंगा. फिर देखना तमाशा. आगे-आगे साबू होगा, पीछे पीछे भैंसा.
लो लल्लू, जैसे तुम्हारे मुंह की बात पूरी हो गई. वह आ रहा है साबू.
चल मेरे पट्ठे! टूट पड़ उस साबू पर.
ओह, खूंखार भैंसा!
हा-हा! वह देखो, जो कल तक बड़ा पहलवान बना फिरता था, भैंसे से जान बचाने के लिये बकरी बना भाग रहा है.

ओह बच गये!
धड़ाक!
अब मेरी बारी है.
साबू ने भैंसे को पूरी ताकत से घुमाया.
और...
धड़ाम!
हाय! मर गया.
© PRAN'S FEATURES 1980

स्कूटर की सैर
एक दिन साबू, चाचा चौधरी और टिंगूमास्टर स्कूटर पर सैर करने निकले.
ऐसा खेल पहले कभी नहीं देखा.
सुना है कि स्कूटर फैक्ट्री ने इस में स्पेशल पुर्जे लगाये हैं.
साबू, हम कितनी रफ्तार से जा रहे हैं?
डेढ़ सौ किलोमीटर की.
कई किलोमीटर दूर
तुम यहां क्यों खड़े हो?
तमाशा देखने. जिस फैक्ट्री ने साबू को स्कूटर दिया है, मैं उसका मेकैनिक हूं. मैंने उस स्कूटर में ब्रेकें नहीं लगायीं.
वह स्कूटर पर तेज रफ्तार से आयेगा और इस खाई में गिर जायेगा.

वाह, ढलान पर तो रफ्तार और तेज हो गयी.
अरे रर साबू; स्कूटर रोको!
कैसे? ब्रेकें तो काम ही नहीं कर रहीं.
अब क्या होगा?
साबू, इंजिन बंद कर दो.
कर दिया है, पर स्कूटर तेज गति में है. रुकते रुकते भी यह पांच-छह किलोमीटर तो चला ही जायेगा.
साबू! आगे गहरी खाई है. स्कूटर मोड़ो.
कैसे मोड़ूं? हैंडल जाम हो गया है.

तो फिर एक ही चारा रह गया है
कूदो!
हाय, मर गया
बचाओ!

मछली पकड़ना
अरे, तुम सारा दिन बैठे-बैठे रोटियां तोड़ते रहते हो. जाओ कुछ कमाई-धमाई करो.
चलो साबू! लगता है आज तुम्हारी चाची हमारे ऊपर ज्वालामुखी की तरह फट पड़ेगी.
लेकिन हम जायें कहां?
समुद्र की तरफ.
डूबने?
अरे बेवकूफ, क्या समुद्र में डूबने ही जाते हैं? मछलियां पकड़ने नहीं जा सकते?

हैलो मिस्टर टाम! क्या करता ?

मिस्टर चौधरी, हम मछली पकड़ता. क्या तुम हमसे मुकाबला करेगा?

ठीक है हो जाये.

जो कम मछली पकड़े वह ज्यादा मछलियां पकड़ने वाले को सौ रुपया दे!

मंजूर!

चाचाजी, क्या कर रहे हो? हमारे पास तो मछली पकड़ने का न कांटा है न जाल.

साबू, चुपरह.

हा-हा! पहलो, हमारा कांटा गया समुद्र में.

थोड़ी देर के बाद

यह देखो! क्या बड़ा मछली फंसा है.

© PRAN'S FEATURE

साबू! जरा समुद्र में एक गोता मार कर बाहर आ जा.

अच्छी बात है.

जय बजरंग बली!

?

साबू किनारे पर आता है.

हा-हा! देखो एक भी मछली नहीं फंसा. हा-हा!

एक मिनट ठहरो मिस्टर टाम!

एक, दो, तीन, चार, पांच, छह, सात... बाप रे, इतनी मछलियां!

चौधरी, पहलो सौ रुपया!

लाजवाब फोटो

अरे फोकट! यह चाचाचौधरी का बुत क्यों पकड़ा हुआ है?

चौरबट, मैं ने एक मजेदार योजना चाचा चौधरी को छकाने के लिये बनाई है.

यह एक गुप्त फव्वारा है.

बुत को इस पर खड़ा कर दिया.

.... अब जल्दी से इधर आओ.

दीवार के पीछे लगे इस बटन को दबाओ.

चौरबट बटन दबाता है

C-322

वाह!

अब अगर इस बुत की जगह सचमुच के चाचाचौधरी को ला कर खड़ा कर दिया जाये तो कैसा रहेगा?

वाह! मार दिया पापड़ वाले को.

अब मैं इस को फुसला कर लाता हूं. तू यहां दीवार के पीछे खड़ा हो कर बटन दबाना.

ठीक है.

फोकट चाचाचौधरी के पास जाता है.

चाचाजी, मेरी तमन्ना है कि अपने घर के सामने खड़ा कर के आप का फोटो लूं.

चलो, चलते हैं.

ठीक, जरा मुस्कराइये.

कमबख्त चौरबट को पता नहीं क्या हो गया है?

दीवार के पीछे..

टिंकूमास्टर, यह डिब्बे में क्या लिये जा रहा है?

लड्डू! लो तुम भी खाओ.

वाह! लड्डू देसी घी के लगते हैं

हां, और खाओ!

धन्यवाद! मेरा फोटो तो खिंच गया.

क्लिक!

.. अब तुम इधर आ कर इसी जगह खड़े हो जाओ. मैं भी तुम्हारा एक फोटो खींचना चाहता हूं.

मुस्कराओ!

मुस्कराहट तो कब की मेरे चेहरे से भाग गई.

गजब हो गया! तुम्हारे लड्डुओं के चक्कर में मैं बटन दबाना भूल गया.

चौकर बटन दबाता है.

ओह!

वाह! यह तो और भी अच्छा पोज है.

क्लिक

फोकट! तुम मेरा फोटो दिखाओ या न दिखाओ, परंतु अपना जरूर दिखाना.

©PRAN'S FEATURES

खोई भैंस

साबू, जरा देखना. दूर से कौन आ रहा है?

चाचाजी, वह अपना ग्वाला माधो है.

क्यों भाई माधो, तू आज दूध देने क्यों नहीं आया?

चाचाजी, रात को कोई मेरी भैंस चुरा कर ले गया. मैं आया हूं कि आप मेरी भैंस ढूंढ कर ला दें.

अरे पागल हो गया है. संयुक्त राष्ट्र संघ के सैक्रेट्री जनरल ने चाचाजी को विश्व की समस्याओं पर परामर्श करने के लिये बुलाया है. वह वहां जाने वाले हैं.

चाचाजी, अगर आप गरीबों की मदद नहीं करेंगे तो इस दुनियां में गरीबों का क्या हाल होगा?

C-320

ठीक है, साबू ! हम संयुक्त राष्ट्र के सैक्रेट्री जनरल से मिलने बाद में जायेंगे, पहले माधो की भैंस ढूंढ कर लायेंगे.

और चाचा चौधरी भैंस को खोजने निकलने के लिये चल दिये.

शहर के एक कोने पर.

सस्ती भैंस ले लो ! दाम सिर्फ तीन सौ रुपये !

इतनी सस्ती भैंस ? जरूर यह चोरी की है.

अरे भई ! मेरे दोस्त साबू को एक भैंस चाहिये.

लेकिन मेरे पास नकद दाम नहीं हैं.

अरे चैक ही दे दो. मैं अभी जा कर बैंक से वह भुना लूंगा

यह लो तीन सौ रुपये का ज्यूपिटर बैंक का चैक.

थैंक्यू मिस्टर साबू !

हां, यही है मेरी भैंस ! चाचाजी, आप का लाख-लाख धन्यवाद !

उधर..

अरे भाई साब. यह ज्यूपिटर बैंक कहां है ? मुझे यह चैक भुनाना है.

हां.

क्या यह चैक तुम्हें साबू ने दिया है ?

तो फिर इसे भुनाने के लिये तुम्हें आठ दस करोड़ रुपया खर्च करना पड़ेगा. साबू ज्यूपिटर ग्रह का निवासी है और यह बैंक वहीं पर है।

PRAN'S FEATURES

आग का रहस्य
एक रात को अलीपुर गांव में..
अरे, आसमान में वह चमकती हुई क्या चीज है?
वह चमकदार वस्तु झोंपड़ियों पर आ गिरी.
भागो.
आग!
आसमान से आवाज आई.
गांव वासियो! अभी कुछ झोंपड़ियों में आग लगी है. पैसे और जेवर यहां रख दो, नहीं तो सारा गांव जला देंगे.
और सब ने पैसे और जेवर निकाल कर रख दिये.

रात को चलते चलते चाचा चौधरी और साबू रास्ता भटक गये.
आगे कुछ आग जलती हुई दिखाई दे रही है.
आगे मत जाना. वहां आसमान से आग बरस रही है.
आग?.. आसमान से? जरूर दाल में कुछ काला है ☼
साबू, आओ देखें! क्या माजरा है?
☼ चाचा चौधरी का दिमाग कम्प्यूटर से भी तेज चलता है.
उधर..
रोपड़
हां चौपड़
अब सारा माल अपना है.
तभी..
ताड़
ओह!

भाग कर कहां जाते हो?
भाईयो! ये दोनों आप को बेवकूफ बना कर ठगते थे
पर वह आसमान से आग का बरसना?
बताता हूं.
कमान से वे स्पेशल आतिशबाजी को आसमान में फेंकते थे.
रात का अंधेरा होने के कारण वह आप को जाती हुई दिखाई नहीं देती थी.
आसमान में जा कर आतिशबाजी में आग लग जाती थी और वह नीचे आती हुई दिखाई देती थी.
और वह आवाज?
उस का रहस्य यह भोंपू है.
भौं!

दो-दो रावण
एक बार चाचा चौधरी को रामलीला पर विशेष रूप से निमंत्रित किया गया.
रामलीला शुरू होने में अब कितनी देर है?
बस, दस मिनट
तभी इंस्पेक्टर दाखिल हुआ.
पुलिस का रामलीला में क्या काम?
डाकू गोबरसिंह जेल तोड़कर भाग गया है. उसी की तलाश में था कि सोचा बैठ कर थोड़ी रामलीला ही देख लूं.
तभी पर्दा खुलता है और रावण का प्रवेश होता है.
देखो, रावण के सिर्फ पांच सिर!
बाकि पांच कहां गये?

© PRAN'S FEATURES

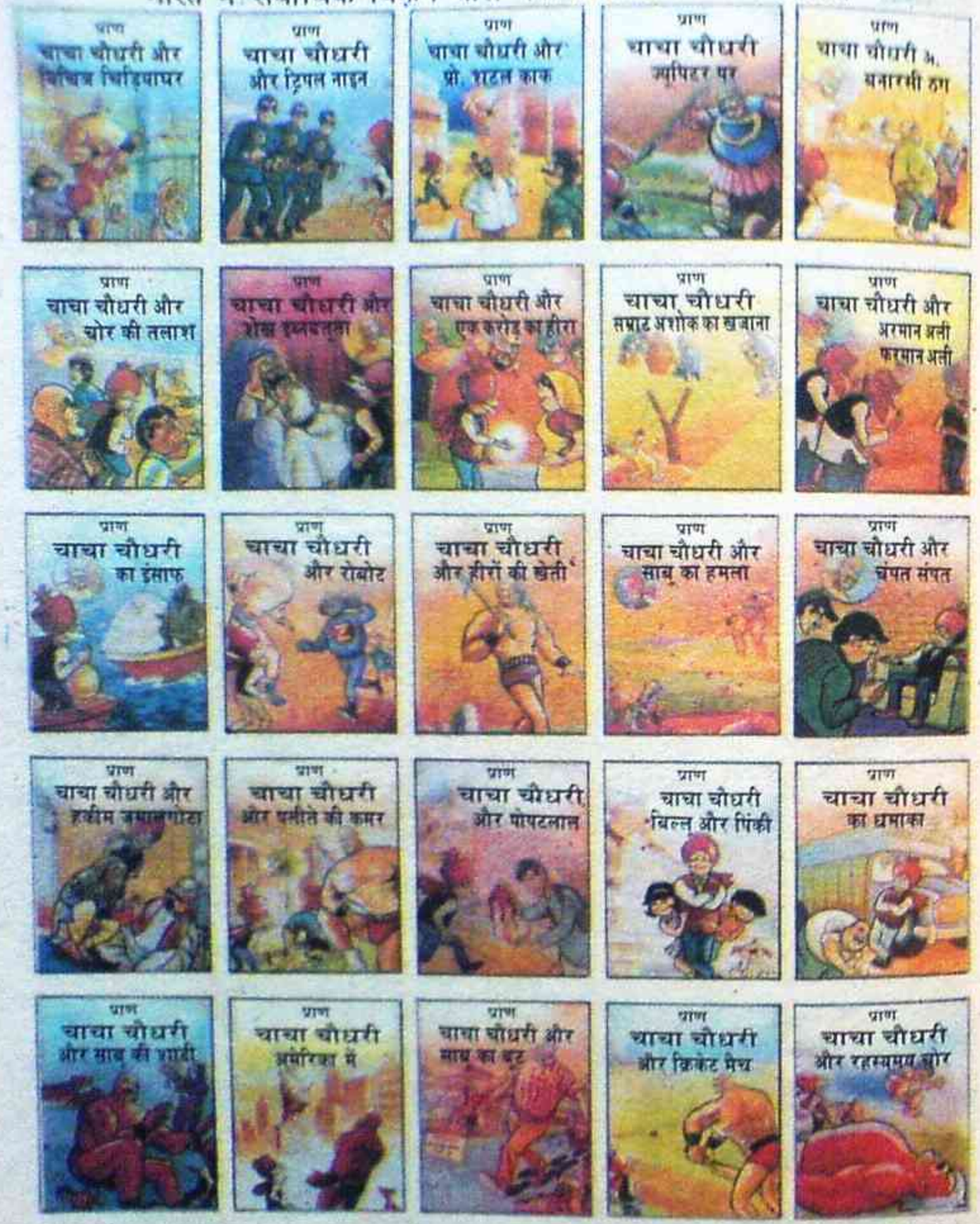

भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स डायमण्ड कॉमिक्स

डायमण्ड कॉमिक्स प्रस्तुति

कार्टूनिस्ट प्राण के

सदाबहार चरित्र चाचा चौधरी, पिंकी, बिल्लू, रमन, श्रीमतीजी, सोनी संपत के मनोरंजक कॉमिक्स

चाचा चौधरी सीरीज'

डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि. X-30, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली-110020

भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स डायमण्ड कॉमिक्स

डायमण्ड कॉमिक्स के गौरवशाली प्रकाशन

सुखद जीवन का आधार

वास्तु एवं ज्योतिष

एक सम्पूर्ण पत्रिका

की अपार सफलता के बाद - हम प्रस्तुत करते हैं

नव वर्ष में कैसा होगा आपका व्यवसाय, नौकरी, स्वास्थ्य एवं परिवार, दाम्पत्य एवं प्रेम जीवन, नव वर्ष में यात्रा के योग, मनोरंजन के अवसर, आपकी शिक्षा, नौकरी, लाटरी योग, अचानक प्राप्त होने वाले धन का योग, आपकी सहयोगी राशियां, रत्न एवं रंग क्या होगा, लाल किताब के आसान टोटकों द्वारा इस वर्ष में आने वाले कष्टों का निवारण, कौन सा दिन, अंक एवं दिशा आपके लिए शुभ है या अशुभ है, ऐसी सभी जिज्ञासा, शुभ मुहूर्त और त्यौहारों का समावेश [illegible] जन्म तिथि के अनुसार आपके सम्पूर्ण [illegible] का भी भविष्यफल

D. C. BOOKS